

༄༅། བོད་ཀྱི་ནང་བསྟན་དཔེ་ཚོགས་ལྟེ་གནས་།

Tibetan Buddhist Resource Center

Text Scan Input Form - Title Page

Work:	W3MS261	ImageGroup:	I3MS275
LCCN:	n/a	ISBN:	n/a

Title:	མདོ་སྐད་དན་ཏིག་དགོན་གྱི་ཚོ་ཏན་སྐར་བར་བཞུགས་པའི་རྩེ་འཇིགས་མེད་རིགས་པའི་སློ་བློས་གྱི་ ཡུག་དཔེ་གལ་ཆེན་རྣམས་ཕྱོགས་གཅིག་ཏུ་བཀོད་པ། mdo smad dan tig dgon gyi tshe tan sgar bar bzhugs pa'i rje 'jigs med rigs pa'i blo gros kyi phyag dpe gal chen rnam phyogs gcig tu bkod pa/
Author:	to-be-supplied to-be-supplied
Descriptor:	n/a
Original Publication:	n/a
Place:	n/a
Publisher:	n/a
Date:	n/a
Volume:	13
Total Volumes:	208
TBRC Pages:	2
Introductory Pages:	n/a
Text Pages:	n/a
Scanning Information:	Scanned at Scanned in partnership with Tibetan Buddhist Resource Center, Cambridge, MA, USA. Comments: DPL480 RFP 85

[Faint handwritten text across the bottom margin]

[illegible]

[Faint handwritten text, likely bleed-through from the reverse side.]

[illegible]

牛三鞭

[illegible]

[illegible]

[The following text is extremely faint and largely illegible due to fading or bleed-through from the reverse side of the manuscript page.]

Handwritten text in the left margin, likely a commentary or index.

Handwritten text in the main body of the manuscript, consisting of several lines of script.

[illegible]

[The following text is extremely faint and largely illegible due to fading or bleed-through from the reverse side of the page.]

[The following text is highly faded and illegible due to extreme blur and low contrast.]

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥
 कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥
 कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥
 कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥
 कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The text in this image is extremely faded and illegible.]

[illegible]

[illegible]

[The image shows a single page from an ancient manuscript, likely written in Devanagari script. The text is densely packed across approximately 10 horizontal lines. There are several large, bold characters interspersed throughout the text, which may represent specific words or serve as section markers. The ink appears dark, possibly iron-based, and the paper has a yellowish, aged appearance. The handwriting is somewhat cursive and characteristic of older Indian scripts.]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टमोऽध्यायः ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥
 प्रोक्तवानहमिदं वक्त्रे त्वं शृणु मे ॥ १ ॥ अहं कुरुक्षेत्रे
 समवेता युयुत्सवे ॥ प्रोक्तवानहमिदं वक्त्रे त्वं शृणु मे ॥ २ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ प्रोक्तवानहमिदं वक्त्रे त्वं शृणु मे ॥ ३ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ प्रोक्तवानहमिदं वक्त्रे त्वं शृणु मे ॥ ४ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ प्रोक्तवानहमिदं वक्त्रे त्वं शृणु मे ॥ ५ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ प्रोक्तवानहमिदं वक्त्रे त्वं शृणु मे ॥ ६ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ प्रोक्तवानहमिदं वक्त्रे त्वं शृणु मे ॥ ७ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ प्रोक्तवानहमिदं वक्त्रे त्वं शृणु मे ॥ ८ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ प्रोक्तवानहमिदं वक्त्रे त्वं शृणु मे ॥ ९ ॥
 अहं कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवे ॥ प्रोक्तवानहमिदं वक्त्रे त्वं शृणु मे ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ।
अर्जुन उवाच । पाशेभ्यः शरीरेषु बद्धोऽस्मि
पापेभ्यः कुरुक्षेत्रे संघातयेत्तु मया ।
कुरुक्षेत्रे संघातयेत्तु मया पापेभ्यः ।
पाशेभ्यः शरीरेषु बद्धोऽस्मि ।

[illegible]

[The following text is extremely faint and largely illegible due to fading and bleed-through from the reverse side of the manuscript page.]

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript page. The text is written in a cursive style and is enclosed within a decorative border. The script is dense and fills most of the page.

[illegible]

20

51

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टाध्याय्ये अष्टमोऽध्यायः ॥
१ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
२ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ १ ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥
३ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ २ ॥
४ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
५ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ ३ ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥
६ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ ४ ॥
७ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
८ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ ५ ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥
९ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ ६ ॥
१० अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥
११ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ ७ ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥
१२ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सज्जनाः ॥ ८ ॥

[illegible]

Handwritten text in a script, likely Devanagari, spanning multiple lines. The text is dense and appears to be a continuous passage, possibly a manuscript or a printed page from an old book. The script is cursive and somewhat faded, with some characters being difficult to decipher. The text is written in a single column, filling most of the page area.

... ॥ १ ॥ ... ॥ २ ॥ ... ॥ ३ ॥ ... ॥ ४ ॥ ... ॥ ५ ॥ ... ॥ ६ ॥ ... ॥ ७ ॥ ... ॥ ८ ॥ ... ॥ ९ ॥ ... ॥ १० ॥ ... ॥ ११ ॥ ... ॥ १२ ॥ ... ॥ १३ ॥ ... ॥ १४ ॥ ... ॥ १५ ॥ ... ॥ १६ ॥ ... ॥ १७ ॥ ... ॥ १८ ॥ ... ॥ १९ ॥ ... ॥ २० ॥ ... ॥ २१ ॥ ... ॥ २२ ॥ ... ॥ २३ ॥ ... ॥ २४ ॥ ... ॥ २५ ॥ ... ॥ २६ ॥ ... ॥ २७ ॥ ... ॥ २८ ॥ ... ॥ २९ ॥ ... ॥ ३० ॥ ... ॥ ३१ ॥ ... ॥ ३२ ॥ ... ॥ ३३ ॥ ... ॥ ३४ ॥ ... ॥ ३५ ॥ ... ॥ ३६ ॥ ... ॥ ३७ ॥ ... ॥ ३८ ॥ ... ॥ ३९ ॥ ... ॥ ४० ॥ ... ॥ ४१ ॥ ... ॥ ४२ ॥ ... ॥ ४३ ॥ ... ॥ ४४ ॥ ... ॥ ४५ ॥ ... ॥ ४६ ॥ ... ॥ ४७ ॥ ... ॥ ४८ ॥ ... ॥ ४९ ॥ ... ॥ ५० ॥ ... ॥ ५१ ॥ ... ॥ ५२ ॥ ... ॥ ५३ ॥ ... ॥ ५४ ॥ ... ॥ ५५ ॥ ... ॥ ५६ ॥ ... ॥ ५७ ॥ ... ॥ ५८ ॥ ... ॥ ५९ ॥ ... ॥ ६० ॥ ... ॥ ६१ ॥ ... ॥ ६२ ॥ ... ॥ ६३ ॥ ... ॥ ६४ ॥ ... ॥ ६५ ॥ ... ॥ ६६ ॥ ... ॥ ६७ ॥ ... ॥ ६८ ॥ ... ॥ ६९ ॥ ... ॥ ७० ॥ ... ॥ ७१ ॥ ... ॥ ७२ ॥ ... ॥ ७३ ॥ ... ॥ ७४ ॥ ... ॥ ७५ ॥ ... ॥ ७६ ॥ ... ॥ ७७ ॥ ... ॥ ७८ ॥ ... ॥ ७९ ॥ ... ॥ ८० ॥ ... ॥ ८१ ॥ ... ॥ ८२ ॥ ... ॥ ८३ ॥ ... ॥ ८४ ॥ ... ॥ ८५ ॥ ... ॥ ८६ ॥ ... ॥ ८७ ॥ ... ॥ ८८ ॥ ... ॥ ८९ ॥ ... ॥ ९० ॥ ... ॥ ९१ ॥ ... ॥ ९२ ॥ ... ॥ ९३ ॥ ... ॥ ९४ ॥ ... ॥ ९५ ॥ ... ॥ ९६ ॥ ... ॥ ९७ ॥ ... ॥ ९८ ॥ ... ॥ ९९ ॥ ... ॥ १०० ॥ ... ॥

卷之五

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पांडवश्चैतानि महाबाहो नमस्कृत्य ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The text in this image is extremely faded and illegible due to low contrast and poor scan quality.]

স্বাধীনতা লাভের জন্য!

... ..

[Faint handwritten text across the bottom of the page, likely bleed-through from the reverse side.]

[Faint handwritten text across the bottom of the page]

[illegible]

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुदेवाय नमः ॥ श्रीगुरुदेव ! त्वत्पदं ध्यायेन् । तदा सर्वपापे भवेन्निवृत्तिरिति श्रुतम् ॥

